1 प्रभाती

सूर्योदय होते ही चाँद और तारे आसमान से विदा लेते हैं। सूर्य की प्रथम रश्मि धरती पुत्रों का माथा सहला कर उन्हें उठा देती है। श्रमजीवी निकल पड़ते हैं अपने कार्यों की ओर।

प्रत्येक सुबह हमारी कहानी का एक नया पृष्ठ आरंभ करती है, जिसे हमने अपने प्रयास से श्रेष्ठ बनाना होता है।

—मेरी के० ऐश

आया प्रभात
चंदा जग से कर चुका बात
गिन-गिन जिनको थी कटी किसी की दीर्घ रात
अनगिन किरणों की भीड़-भाड़ से भूल गए
पथ, और खो गए, वे तारे।

अब स्वप्नलोक
के वे अविकल शीतल, अशोक
पल जो अब तक थे फैल-फैलकर रहे रोक
गतिवान समय की तेज़ चाल
अपने जीवन की क्षण-भंगुरता से हारे।

जागे जन-जन
ज्योतिर्मय हो दिन का क्षण-क्षण
ओ स्वप्न प्रिये! उन्मीलित कर दे आलिंगन
इस गरम सुबह, तपती दुपहर, में निकल पड़े
श्रमजीवी, धरती के प्यारे!

– रघुवीर सहाय